हिमाचल प्रदेश के शीत मरुस्थल में सतत् आजीविका हेतु पॉपलर के रोपण एवं प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट

Report of One Day Training Program on Poplar Plantation and Management for Sustainable Livelihoods in Cold Desert of Himachal Pradesh

भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने **"हिमाचल प्रदेश के शीत मरुस्थल में सतत् आजीविका हेतु पॉपलर के रोपण एवं प्रबंधन"** पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 29/05/2025 को संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, ताबो, लाहौल स्पिति में किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों व अन्य स्थानीय लोगों ने भाग लिया। प्रशिक्षण मुख्य रूप से पॉपलर के रोपण एवं प्रबंधन पर जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित था । यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय प्राधिकरण प्रति पूरक वनीकरण निधि प्रबंधन और योजना प्राधिकरण (**CAMPA**), पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित परियोजना 'Domestication, Genetic Characterization, Improvement and Diversified Utilization of Poplars' के अंतर्गत किया गया। डॉ. बालकृष्ण तिवारी, वैज्ञानिक, हि.व.अ.सं., शिमला और उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक ने मुख्य अतिथि डा. संदीप शर्मा, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला एवं विशिष्ट अतिथि श्री गौरव कुमार शाखा प्रबन्धक, **SBI**, ताबो, लाहौल स्पिति और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किए जाने वाले विषयों के बारे में जानकारी दी और संस्थान के शोध कार्यों पर प्रकाश डाला।

डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला, ने विशिष्ट अतिथि एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। अपने संबोधन में उन्होंने आधुनिक नर्सरी की स्थापना हेतु सरल, प्रभावी एवं उपयोगकर्ता के अनुकूल तकनीकों पर विस्तार से चर्चा की। इसके साथ ही, उन्होंने शीत मरुस्थलीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले विविध उपयोगी पौधों—जैसे जूनिपर, सैलिक्स, प्रमुख औषधीय पौधों तथा पॉपलर की नर्सरी प्रबंधन तकनीकों से जुड़े अपने अनुभव प्रतिभागियों के साथ साझा किए। उन्होंने इन तकनीकों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल ढालने तथा आजीविका संवर्द्धन में इनके संभावित योगदान को भी रेखांकित किया।

विशिष्ट अतिथि ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा प्रयासों की सराहना की और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण में बताई गई तकनीकों को अपनाने की सलाह दी।

डॉ. अश्वनी तपवाल, वरिष्ठ वैज्ञानिक, हि.व.अ.सं., ने बताया कि पेड़ पौधों पर बीमारी करने वाले कवक/फफूंद वन पारिस्थितिक तंत्र के लिए एक गंभीर खतरा हैं, जो पेड़ों की बड़े पैमाने पर मृत्यु और जैव विविधता संतुलन को अस्तव्यस्त करने का कारण बन सकते हैं। पेड़ों की संख्या को संरक्षित रखने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए रोगजनक कवक का प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। डॉ. अश्वनी तपवाल ने पॉपलर पे लगने वाली विभिन्न बीमारियों पर विस्तृत चर्चा की और उनकी रोकथाम के लिए जैविक नियंत्रकों की जानकारी साझा की।

डॉ. बालकृष्ण तिवारी, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने अपने वक्तव्य में बताया कि शीत मरुस्थलीय क्षेत्रों में सतत् आजीविका सुनिश्चित करने हेतु पॉपलर की विभिन्न प्रजातियाँ अत्यंत

उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। उन्होंने इन क्षेत्रों में विद्यमान पॉपलर की प्रजातियों की विशेषताओं, उनके नर्सरी प्रबंधन, रोपण तकनीकों तथा संभावित लाभों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उनके अनुसार, उचित तकनीकी जानकारी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ पॉपलर का रोपण न केवल स्थानीय समुदायों की आर्थिकी को सशक्त कर सकता है, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन में भी सहायक हो सकता है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि कृषि-वानिकी में उच्च गुणवत्ता एवं अधिक उत्पादन देने वाले वृक्षों की प्रजातियाँ अथवा क्लोन अपनाने से कृषकों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। इस संदर्भ में डॉ. तिवारी ने संस्थान द्वारा पॉपलर पर किए जा रहे अनुसंधान एवं विकास कार्यों की जानकारी साझा की, तथा कृषि-वानिकी में इन प्रजातियों के एकीकृत उपयोग के लाभों पर भी प्रकाश डाला।

कार्यक्रम की झलकियाँ

****